बैजनाथ मन्दिर समूह एवं स्थापत्य का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 कमल सिंह

इतिहास विभाग, के. के. एस. एस. प्वाईन्ट, कठायतवाडा, नियर पी0 जी0 कॉलेज, बागेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत

Correspondence Author: डॉ0 कमल सिंह

Received 10 Jun 2023; Accepted 18 Jul 2023; Published 25 Jul 2023

सारांश

उत्तराखण्ड के वर्तमान जनपद बागेश्वर के गरूड़ तहसील के अन्तर्गत आस्था का प्रमुख केन्द बैजनाथ मन्दिर समूह अत्यन्त प्राचीन है। यह एक प्राचीन शिव मंदिर के रूप विख्यात है। यह नागर शैली पाषाण खंडों से निर्मित है। जिसमें शिवलिंग स्थापित है यह मंदिर समूह धार्मिक और पौराणिक स्थल होने के साथ–साथ उत्तराखण्ड के इतिहास में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह मंदिर समूह गोमती नदी के बांये तट पर स्थित है, यह स्थान कत्यूर धाटी के नाम से भी विख्यात है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार पार्वती से विवाह करने जाते समय भगवान शिव ने अपनी बारात के साथ गोमती के किनारे इसी स्थान पर बैठकर विश्राम किया था। और इस स्थान को वैद्यनाथ नाम से भी जाना जाता है। इस क्षेत्र में लोक मान्यता है कि भगवान शिव के इस स्थान पर बैठने मात्र से ही यहॉ की समस्त वनस्पति औषधीय जड़ी–बूटी बन गई।

यह मंदिर समूह 17 मंदिर विभिन्न देवी–देवताओं को समर्पित है। इसमें प्रमुख भगवान शिव, पार्वती, गणेश, केदारनाथ आदि हैं और इन मंदिरों का निर्माण काल 9–12 वीं शताब्दी के मध्य माना जाता है। वर्तमान में भी इस मंदिर समूख की मान्यता व धार्मिक विश्वास पूर्व की भांति प्रविष्ठित है। और वर्तमान में यहॉ उपनयन संस्कार एवं विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान भी यथा समय किये जाते है जो इसकी लोक मान्यता एवं ऐतिहासिकता को दर्शाता है।

मूलशब्द: प्राचीन, वैद्यनाथ, बैजनाथ मन्दिर, स्थापत्य, वास्तुकला, ऐतिहासिकता, पुरातत्व, मूर्तिकला।

परिचय

देवभूमि उत्तराखड का बागेश्वर जनपद अनेक मन्दिर, तीर्थ एवं धर्मिक स्थलों की भूमि है। इसमें प्रमुख रूप से बैजनाथ मन्दिर समूह भी एक है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक एवं राजनीतिक आधार पर कत्यूरियों की राजधानी भी रही है। यह भूमि शिव–पार्वती के विवाह से संबंध रखता है और इस स्थान पर भगवान शिव के बैठने मात्र से ही यहॉ की समस्त वनस्पति औषधीय जड़ी–बूटी बन गई। जिस कारण इसका नाम वैधनाथ पड़ गया और कालांतर में जो बैजनाथ नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र की ऐतिहासिकता का प्रमुख उद्हारण "कत्यूरी लोकगाथाओं में मिलता है ब्रह्मपुर राज्य के पतन के पश्चात लगभग 700 ई. में कत्यूर राजवंश का एक शक्तिशाली एवं ऐतिहासिक राजवंश का उदय हुआ"[1]। लगभग तीन सदीयों तक कार्तिकेयपुर राजवंश ने मध्य हिमालय में पहली बार राजनीतिक एकता स्थापित की। इस राजवंश के अब तक नौ अभिलेख प्राप्त हुए हैं इस वंश के प्रतापी राजाओं की राजधानी कार्तिकेयपुर रही है और इनके पराजय के समय तक बैजनाथ में इनकी राजधानी रही।

कत्यूरी लोक गाथाओं के अनुसार "इनकी मुख्य राजधानी बैजनाथ के रणचूलाकोट"[2] में थी। आसंति देव को कत्यूर के बैजनाथ में स्थापित नये राजवंश के संस्थापक माने जाते हैं। कार्तिकेयपुर के कत्यूरी शासकों द्वारा रणचूला देवी को कुलदेवी के रूप में अपनी पुरातन राजधानी बैजनाथ से डेढ़ किमी. की दूरी पर स्थित उनके पुराने किले के भीतर स्थापित किया गया। इसके बाद यह क्षेत्र सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से विकसित होती रही।

बैजनाथ मन्दिर समूह मूर्तिकला, पाषाणकला का एक उत्कृष्ट उदहारण है इस मंदिर समूह की प्रतिष्ठित पार्वती मूर्ति पाषाण कला का एक उत्कृष्ट उदहारण है। यह 1.5 मीटर ऊॅची समपादस्थानक मुद्रा में विराजमान देवी मूर्ति नाना आभूषणों से भूषित चतुर्भुजी है। और एक ही मूर्ति में अनेको मूर्ति को इसमें उकेरा गया है जो वर्तमान में भी मूर्तिकला, पाषाणकला का एक ऐतिहासिक उदहारण है।

उद्देश्य

1. बागेश्वर में स्थित बैजनाथ मंदिर समूह का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व महत्व का अवलोकन करना।
2. बैजनाथ मंदिर समूह के संस्कृतिक धरोहर की उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. बैजनाथ मंदिर समूह के स्थापत्य एवं कलाशिल्प का अध्ययन करना।
4. बैजनाथ मंदिर समूह के राजनीतिक पक्ष के परिपेक्ष में इसके महत्व को जानना।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी द्वारा विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक विधि एवं ऐतिहासिक तथ्यों व साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन **"बैजनाथ मन्दिर समूह एवं स्थापत्य का ऐतिहासिक अध्ययन"** में शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक ऑकड़ो का प्रयोग साक्षात्कार एवं अपरूक्षेय लोकजागरो, लोककथाओं, प्रस्तर लेखों, मंदिर से स्थापित मूर्तियों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही द्वितीयक ऑकडों में बागनाथ मंदिर से संबंधित पत्र–पत्रिकाऐं, पुस्तकें, समाचार पत्रों की सहायता ली गई है। साथ ही अध्ययन क्षेत्र को चित्र, आकृति फोटोग्राफ के माध्ययम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

बैजनाथ मंदिर समूह का ऐतिहासिक एवं राजनीतिक महत्व

इस मंदिर समूह की पहचान प्राचीन कत्यूरी धाटी के मन्दिर के रूप में है प्रायः 700 ई0 से लेकर आगे तीन शतियों तक (700 ई0 से 1050 ई) "कार्त्तिकेयपुर राजवंश" ने मध्यहिमालय में पहली बार राजनीतिक एकता स्थापित की एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में आरम्भकालीन वास्तुकला की मूल्यवान छाप छोड़ी और यह भी सत्य है कि मध्य हिमालय का यह प्रथम राजवंश है जिसके वर्तमान तक नौ अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं।

"कार्त्तिकेयपुर राजवंश के प्रथम तीन परिवारों के चौदह नरेशों का कार्यकाल लगभग तीन सौ वर्षों"[3] तक रहा। इनके तीन परिवारों में प्रथम परिवार का वसन्तन देव वंश इसके संस्थापक माने जाते है। और निम्बरदेव द्वितीय परिवार का तथा सुभिक्षराजदेव तृतीय परिवार के माने जाते है। दूसरी शती ई0 के अंत व ग्यारहवीं शती के आरंभिक दशक के आरम्भ में सुभिक्षराजदेव के किसी वंशज ने कुमाऊँ की गोमती घाटी में राजधानी स्थानान्तरण कर दी। जिसे बैजनाथ शिलालेखों में वैधनाथ–कार्त्तिकेयपुर कहा गया। जिसकी जानकारी बैजनाथ अभिलोखों से प्राप्त होते है। इसमें वैधनाथ को कार्त्तिकेयपुर कहा गया है। सुभिक्षराजदेव के जिन वंशजों ने अल्पकाल के लिए वैद्यनाथ में शासन किया है उनमें बैधनाथ मूर्ति लेख में लखनपाल, इन्द्रपाल, त्रिभुवनपाल, नामों के साथ–साथ वामनपाल, महीपाल, उदयपाल के नामों का उल्लेख मिलता है। किन्तु वर्तमान में बैजनाथ शिलालेखों के पाठ की उपल्बधता न होने के कारण इन राजाओं का नाम व क्रम निर्धारण करना अत्यन्त कठिन है।

परन्तु राहुल सांस्कृत्यायन ने इसे "अर्द्धासन मारे कुबेर (यक्ष) जैसी मूर्ति"[4] बताया है किन्तु यह स्पष्ट है कि कत्यूरियो की यह राजधानी बैजनाथ कार्तिकेयपुर दसवीं सदी के आस–पास प्राचीन कार्तिकेयपुर (योषिका–जोशीमठ) से उखड़कर आई थी। इस लिये यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र को पहचान प्राचीन कत्यूरी घाटी जो प्रायः "700 ई० से लेकर 1050 ई० तक कार्तिकेयपुर राजवंश ने मध्य हिमालय में पहली बार राजनैतिक एकता स्थापित की"[5]।

प्राचीन ऐतिहासिक सन्दर्भों मे कार्तिकेयपुर वंश को भी कत्यूरी वंश के नाम से वर्णित किया गया है किन्तु डॉ० कठोच ने इसकी आलोचना की है उनका मानना है कि "कार्तिकेयपुर वंश का उत्थान मध्यकाल मे वैद्यनाथ कार्तिकेयपुर के पतनोपरान्त कत्यूर घाटी में ही तेरहवीं शदी ई० के प्रथम चतुर्थांस मे हुआ कत्यूरी गाथाओं के अनुसार बैजनाथ के रणचूलाकोट में उनकी मुख्य राजधानी थी आसन्तिदेव को कत्यूरी–बैजनाथ में स्थापित नये राजवंश का संस्थापक माना गया है"[6]।

इतिहासकारों का मानना है कि 1881 ई० मे यहाँ मात्र 117 लोग रहते थे व उसमें गुसांई नाथों की अधिकता का गजेटियरों में संकेत है कि यहाँ चीनी यात्री ह्वेनसांग सम्भवतः यहाँ बौद्ध ग्रन्थ–बिहार की यात्रा की हो को बैजनाथ मन्दिर के चारों ओर नाथों के छोटे–छोटे समाधि मन्दिर प्रांगण में बहुत मूर्तियाँ रखी है जिसमें ये निश्चत ही बुद्ध की भी हो यह विवरण गजेटिया मे इस प्रकार है -

"Along its, walls are old Sculpture collected from different places, most of which are of modem Hindi origin, but one is clearly a representation of Buddha and must have bolonged to a temple of that used which flourished here in the eight century of our era according to the Huen thsang" [7].

किन्तु यह सत्य है कि नाथ सम्प्रदाय अवश्य रहता है किन्तु बौद्ध विहार एवं बौद्ध मन्दिर यहाँ पर स्थित नहीं है इसके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में भी यहाँ नाथ सम्प्रदाप नाथ; गोस्वामी यहाँ निवास करते हैं जो इस बात की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करता है।

बैजनाथ मन्दिर समूह स्थापत्य, वास्तुशिल्प एवं मूर्तिकला

वर्तमान जिला बागेश्वर से 20 कि०मी० दूरी पर बैजनाथ मन्दिर आस्था का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ के स्थानीय लोगों का मानना है कि यह स्थान एक हजार वर्ष पहले वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध था इसी का अपभ्रंश रुप बैजनाथ है "बैजनाथ मन्दिर गोमती नदी के बाये तट पर मल्ला कत्यूर पट्टी परगना दानपुर में 29^0 59″ 24′ उत्तरीय अक्षांश तथा– 79^0′ 39″ 28′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित एक तीर्थ स्थान है"[8]।

"बैजनाथ मन्दिर समूह के सन्दर्भ में पुरातत्व विभाग ने इसे 9–12 वीं सदी का नागर शैली में बना बताया है। यहा एक मन्दिर के उत्तर पश्चिम कोने पर एक लघु देव कुलिका पट्टियॉ सी बनी हैं जो शिखर शैली की हैं उसकी अग्र भित्ति पर देवनागरी लिपि के उल्लेख भी अंकित हैं। इसमें एक लेख तिथि "शाके 1235 अर्थात 1313 ई०"[9] की है जबकि "मुख्य मन्दिर में 10वीं से लेकर 16वीं शती तक की मूर्तियाँ हैं जिसमें बाराह, नारायण, गरुड़, गणेश तथा दशावतार पट और विष्णु की स्थानक प्रतिमा (1.15×0.95) सुन्दर है तथा पूजित है यहाँ एक चतुर्भुज देव प्रतिमा (50×34 सेमी०) कामदेव की भी हैं। जिसका पुष्प, धनुष, बाण, मुकुट, गले का ग्रेवेयक, का केयूर, कलाई के कड़े कटि का कमरबन्ध, पैरों के नूपुर, पाश्वों में परिचारिकायें सभी सुन्दरता से अंकित हैं। इस मूर्ति को 10वीं सदी ई० का माना जाता है। एक नृवाराह अवतार की मूर्ति को 8–9वीं सदी का बताया गया है। अनुमान होता है कि रणिहाट श्रीनगर के समान कभी यहाँ भी देवचेलियाँ रासी देवता की पूजा करती थी [4, 5]। "इस मन्दिर में गरुड़ की दो प्रतिमायें हैं (47×30 सेमी० तथा 60×35 सेमी) मानवरुपी द्विबाहु गरुड़ बांया घुटना टेके है दोनों हाथों में अमृतहाट है, कन्धों के पीछे दो सुन्दर पंख है। इनका पुरातत्व भी 10 से लेकर 12 वी सदी मध्यकाल आंका गया है"[10]।

बैधनाथ मन्दिर समूह की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय मे बैजनाथ मन्दिर समूह का रख रखाव पुरातत्व विभाग के पास है। यह मन्दिर मुख्य रुप से भगवान शिव को समर्पित है। इसके अतिरिक्त यहाँ 17 अलग–अलग मन्दिर समूह हैं। जिसमें "शंकर, पार्वती, गणेश, केदारनाथ"[11] आदि प्रमुख मन्दिर है। इसमें पार्वती, मन्दिर मे प्रतिष्ठित मूर्ति पाषाण कला का सबसे उत्कृष्ट उद्हारण है। यहाँ के लोक जागरों में जनश्रुति है कि यह स्थान शिव विवाह के साथ भी जोड़ा जाता है। कहा जाता है कि "शिव यहाँ से ही पार्वती के साथ शिव कैलाश"[12] को गये वर्तमान में इस स्थान पर धार्मिक अनुष्ठान, उपनयन संस्कार, सम्पन्न किये जाते है वर्तमान में इसी के समीप एक झील का निर्माण किया गया है जो पर्यटन को बढ़ावा एवं मन्दिर के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है।

बैजनाथ मन्दिर समूह "वास्तुशिल्प मूल रुप से नागर शैली"[13] में निर्मित है जिसके शिखर भाग ध्वज होने के कारण वर्तमान में चादरों से आच्छादित किया गया है। "इन मन्दिरों का निर्माण काल 9 से 12वीं शताब्दीं के मध्य रखा गया है"[14] बैजनाथ मन्दिर समूह अत्यन्त प्राचीन धरोहर है जिसे वर्तमान में पुरातत्व विभाग के संरक्षण में शामिल किया गया है।

परिणाम

1. बागेश्वर में स्थित यह मंदिर अत्यन्त प्राचीन एवं पवित्र है। इस क्षेत्र को उत्तर की वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है, यहॉ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु आते हैं। जिससे क्षेत्रीय लोगों को अच्छी आय प्राप्त हो रही है। रोजगार, स्वरोजगार में वृद्धि तथा पलायन में भी कमी आयी है।
2. वर्तमान में इस मन्दिर में पार्किंग एवं बहुमुखी विकास कार्यो का पर्यटकों के अनुरूप व्यवस्था की गई है जिससे यह क्षेत्र से श्रद्धा का केन्द बन गया है तथ पर्यटन के क्षेत्र में तीब्र उन्नति हो रही है।
3. इस मन्दिर के प्रति अपार श्रद्धा एवं लोकप्रियता व पवित्रता का प्रमुख कारण यह है कि कौसानी जिसे गॉधी जी द्वारा भारत का स्वीजरलैण्ड कहा है वह इस मंदिर समूह से मात्र 18 किमी. दूर है और जो यहॉ आता है वह अवश्य ही इस मन्दिर के दर्शन अवश्य ही करता है। और साथ ही यह बागेश्वर जनपर में स्थित है और बागेश्वर में पवित्र सरयू नदी का उद्गम बागेश्वर जनपद से होकर अयोध्या तक जाना इस क्षेत्र को अत्यन्त अलोकित करती है। और यह क्षेत्र उत्तराखण्ड के पॉचवे धाम के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है और वर्ष 2023 में पहली बार यहॉ अर्द्धकुम्भ हुआ जिसमें देश–विदेश के 5 लाख से अधिक संत महात्मा, श्रद्धालु तथा क्षेत्रीय जनता सामिल रहे और वह लगभग सभी बैजनाथ मन्दिर दर्शन के बाद ही वापस गये।

4. यह एक मात्र वह क्षेत्र है जहॉ से होकर ही गॉधी जी पहली बार बागेश्वर उत्तराखण्ड राज्य में आये।

निष्कर्ष

बागेश्वर, उत्तराखण्ड में हिमालय के निकट बसे प्राचीन नगरों में प्रमुख है और बैजनाथ सवसे प्राचीन राजधानी के रूप में इस क्षेत्र की प्रमुख पहचान है। इस क्षेत्र में मिल लेखों, अर्थात् ललितशूर देव के ताम्रपत्राभिलेख के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि इनके दानपत्र की तिथि 22 दिसम्बर 853 निश्चित होती है। इस प्रकार इसका राज्य रोहण 830 ई0 में हुआ होगा। और यदि ललितशूर देव के पूर्ववर्ती सात नरेशों में प्रत्येक का औसत शासनकाल लगभग 20 वर्ष माना जाय तो प्रथम कत्यूरी नरेश बसंतदेव का काल 700 ई0 निश्चित ही रहा होगा।

पांडुकेश्वर में भी कत्यूरी सम्राटों से सम्बन्धित शिलालेख प्राप्त हुए हैं। इस ताम्रपत्र में लिखा है कि निम्वर्तदेव ने विदेशी शत्रु पर विजय प्राप्त की। इस राजवंश के सबसे शक्तिशाली राजा ललित शूरदेव को माना जाता है पांडुकेश्वर ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि इन्होने खस, किरात, सोर नामक नाग एवं चांडाल राजाओं को अपने अधीन कर लिया था और इन्होने तिब्बती हूणों को भी अपने अधीन कर लिया था, और इनका राज्य विस्तार मणकोट, सीरा, (डीडीहाट) दारमा, जौहार, अस्कोट, सोर, काली क्षेत्र तक हो गया था।

बैजनाथ में मुख्य मन्दिर भगवान शिव का है। मुख्य मंदिर के निकट ही शिव मूर्ति के निकट डेढ़ मीटर ऊॅची पार्वती की प्रतीमा तथा कई अन्य देवताओं की छोटी–छोटी पाषाण मूर्तियॉ हैं। इस क्षेत्र के एक शिलालेख से ज्ञात होता है 1552 ई0 में कत्यूरी तथा गंगोली राजाओं ने इस मंदिर का पुनः निर्माण कराया था। वर्तमान में इस मंदिर के समीप सिंचाई हेतु तालाब का निर्माण किया गया है जिसमें विभिन्न मनमोहक मछलियों के समूह आर्कषण का केन्द्र है और यहॉ प्रतिवर्ष शिवरात्री को भव्य पूजा अर्चना होती है और यहॉ अनेको हिंदू धार्मिक अनुष्ठान भी यथा समय होते रहते हैं इसमें प्रमुख उपनयन संस्कार, विवाह, आदि संस्कारों का भी आयोजन होता है वर्तमान में वर्ष 2023 में पहली बार इस मंदिर में किताब कौतिक (किताब मेले) का आयोजन भव्य रूप से हुआ जिससे इस क्षेत्र में शिक्षा के सरस्वती मॉ की पूजा की शुभारंभ भी हुआ है। और सामाजिक, सांस्कृतिक, व व्यापारिक रूप से भी यह मंदिर समूह वर्तमान तक विशिष्ट पहचान रखता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बागेश्वर इतिहास और संस्कृति, डा. दिनेशचंद्र बलूनी, प्रकाशन समय साक्ष 15 फालतू लाईन, देहरादून उत्तराखण्ड, पृ0 सं 23–24।
2. उपरोक्त, पृ0 सं 132–133।
3. मानसखण्ड (कुमाऊॅ–इतिहास, धर्म, संस्कृति, वास्तुशिल्प एवं पर्यटन) हेमा उनियाल, प्रकाशन उत्तरा बुक्स, बी–4–310 सी0 कुशवपुर दिल्ली, 110035, पृ0 सं 312।
4. उपरोक्त, पृ0 सं 313।
5. उपरोक्त, पृ0 सं 311।
6. महाभारत आस्तिक पर्व 57/5–6।
7. उत्तराखण्ड के लोक देवता, शर्मा डी डी, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी नैनीताल पृ. 134।
8. कुमाऊॅ का इतिहास, पाण्डे बद्रीदत्तः प्रकाशन अल्मोडा बुक डिपो अल्मोडा, पृ.175।
9. कुमाऊॅ का इतिहास, पाण्डे बद्रीदत्तः प्रकाशन अल्मोडा बुक डिपो अल्मोडा, पृ.173।
10. श्री लछंम सिंह, 70, बड़ी पन्याली शामा कपकोट बागेश्वर, दि. 15/04/2018 साक्षात्कार।
11. सुन्दर सिंह मेहरा, 54:स्याँकोट बागेश्वर, दि. 10/09/2019 समय 7पी.एम.।
12. पूर्वोक्त साक्षात्कारः श्री लछम सिंह।
13. पूर्वोक्त, उनियाल, हेमाः पृष्ठ 385।
14. उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक इतिहास, रावत डॉ. अजय सिंह, अंकित प्रकाशन चन्द्रावती कलोनी हल्द्वानी नैनीताल, पृ0 सं 199।